Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

Research Article

"डा.भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता"

पीयूष कुमार[1], शिवानी गोयल[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जे.एस.हिन्दू पी.जी.कालिज, अमरोहा (उ.प्र.)

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग जे.एस.हिन्दू पी.जी.कालिज, अमरोहा (उ.प्र.)

प्रस्तावना :

बाबा साहेब डा.भीमराव अम्बेडकर का व्यक्तित्व एक सतत् संघर्ष की प्रक्रिया में तप कर निर्मित हुआ है। डा.अम्बेडकर ने अपने आत्म-विश्वास एवं आत्म-शक्ति को समाज की बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए मजबूत कर लिया। जिससे उनका व्यक्तित्व अपने आप में इतना श्रेष्ठ हो गया कि उनका व्यक्तित्व एवं विचार आज भी समाज के विकास के लिए प्रांसागिक एवं उपयोगी है। डा.अम्बेडकर ने न सिर्फ समाज की बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया अपितु उन्होंने समाज की उन्हीं बुराइयों का कुप्रभावों स्वयं भी झेला। इस संघष से जिस व्यक्तित्व का निर्माण हुआ वह बहुत ही विराट तथा बहुआयामी था। वह एक जनसेवी राजनेता, कानून, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र के आधिकारिक विद्वान, कुशल नागरिक, प्रखर वक्ता, सफल वैरिस्टर, लेखक, पत्रकार एवं दूरदर्शी चिन्तक ही नहीं अपितु महान शिक्षाविद् भी थे।[1]

डा.अम्बेडकर के व्यक्तित्व के विषय में बरवे निक्लस ने कहा-"डा.अम्बेडकर साहब भारत के छह अति उत्तम दिमागों में से एक हैं। वह ऊँचे किस्म के राजनीतिज्ञ तथा चोटी के तत्वदर्शी हैं, उनका अभिभाषण दिल हिला देने वाला प्रभावशाली एवं सार्थक होता है।"

समाज में व्याप्त अनेकों बुराइयों को दूर करने के लिए समाज के निर्माता अध्यापक के व्यक्तित्व के महत्व को समझते हुए डा.अम्बेडकर साहब ने कहा कि-"एक आदर्श अध्यापक न केवल विद्वान ही होना चाहिए बल्कि स्पष्ट स्वर में बोलना चाहिए, वह सुभाषी हो।" मेरे आन्तरिक व्यक्तित्व एवं प्रतिभा का विकास प्रोफेसर सेलिग्मन जैसे लोगों के संसर्ग में हुआ।[2]

अपने व्यक्तित्व के निर्माण के लिए डा.अम्बेडकर ने इतनी कठोर तपस्या की कि उसको शब्दों के माध्यम से व्यक्त तो नहीं किया जा सकता लेकिन उनके बताए मार्ग पर चल कर उसको महसूस अवश्य किया जा सकता है। इसीलिए डा.भीमराव अम्बेडकर के व्यक्तित्व का लोहा मानते हुए कोलम्बिया विश्वविद्यालय ने उन्हें, भारत के प्रमुख नागरिकों में से एक महान समाज सुधारक एवं मानव अधिकारों का रक्षक बताया।[3]

डा.भीमराव अम्बेडकर अपने जीवन में जितने प्रभावशाली थे उससे कहीं अधिक प्रभावशाली वे आज हैं। भारतीय राजनीति एवं समाज की पुर्नसंरचना में उनके विचारों की सशक्त भूमिका है। तात्कालिक समाज में व्याप्त अनेकों बुराइयों को दूर करने के लिए डा.अम्बेडकर ने एक सबसे महत्वपूर्ण बुराई अस्पृश्यता पर बहुत जोरदार चोट की। उन्होंने अस्पृश्यता के समापन के लिए अनेक प्रकार के कार्य किए। इस कार्य के दौरान उन्हें कहीं-कहीं गाँधी का विरोधी होने का तमगा भी दिया गया परन्तु वास्तविकता यह है कि दोनों विचारकों का लक्ष्य एक ही था लेकिन रास्ते अलग-अलग थे। रास्तों के अलग-अलग होने के पीछे सबसे

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

महत्वपूर्ण कारण यह था कि डा.अम्बेडकर ने स्वयं इस बुराई को झेला और इसके विरुद्ध अपने आपको तैयार किया। डा.अम्बेडकर ने अस्पृश्यों के उत्थान के लिए 4 मार्च 1924 को मुंबई के दामोदर सभागृह में अस्पृश्य वर्ग के लोगों की सभा आयोजित की। इस सभा में पारित प्रस्ताव के अनुसार 20 जुलाई 1924 को एक नये संगठन ने जन्म लिया जिसका नाम था "बहिष्कृत हितकारिणी सभा।" इस सभा के माध्यम से डा.भीमराव अम्बेडकर ने अस्पृश्यों के उत्थान के लिए जो कार्य किए उन कार्यों की आवश्यकता आज भी समाज के विकास के लिए महसूस होती प्रतीत हो रही है। मेरा मानना है कि समाज तभी विकास कर सकता है जब उसमें समाज का प्रत्येक वर्ग शामिल हो।

डा.अम्बेडकर की नजर में भारत में व्याप्त क्षेत्रवाद भी एक समस्या थी। सम्पूर्ण देश में क्षेत्रवाद फैला हुआ था जिसके कारण आपसी भाईचारे की कमी महसूस हो रही थी। डा.अम्बेडकर के नजरिये से यह समस्या बहुत ही गम्भीर थी। दूसरे दृष्टिकोण से यदि देखा जाए तो इस समस्या के कारण एक क्षेत्र का व्यक्ति दूसरे क्षेत्र के व्यक्ति से अस्पृश्यों जैसा व्यवहार करता था।

दुर्भाग्यवश आज 21वीं सदी में भी डा.अम्बेडकर की कर्मभूमि पर क्षेत्रवाद जैसी समस्या भयंकर रूप लिए हुए है। आज के राजनेता अपनी राजनैतिक रोटियाँ सेंकने के लिए क्षेत्रवाद जैसी ज्वलंत समस्या में घी का कार्य कर रहे हैं। महाराष्ट्र की राजनैतिक पार्टी मानसे द्वारा उत्तर भारतीयों पर किए गए हमले इस समस्या का जीता जागता उदाहरण है या कहें कि डा.अम्बेडकर के प्रयासों को विफल करने का एक नया तरीका है। जिस राष्ट्र में एक व्यक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र के किसी भी स्थान पर स्वतंत्र रूप से नहीं रह सकता तो वहाँ कैसा राष्ट्रवाद? एवं कैसी राष्ट्रीय भावना? वास्तव में यह समस्या देश के विकास के लिए बहुत ही घातक सिद्ध हो रही है।

डा.अम्बेडकर भाषावाद में विश्वास नहीं रखते थे। वे सभी लोगों द्वारा स्वीकृत एक भाषा में विश्वास रखते थे। वे ऐसी एक भाषा द्वारा देश की एकता और राष्ट्रीयता की भावना मजबूत बनाना चाहते थे। डा.अम्बेडकर को भारत की सांस्कृतिक एकता में विश्वास था। इसी सांस्कृतिक एकता के कारण उन्होंने जातिय विभाजन को चनौती दी तथा विश्वास दिलाया कि यह संस्कृति उनकी एकता को बनाए रखेगी।[4]

प्रथम बार महात्मा फुले ऐसे दलित सुधारक हुए जिन्होंने निम्न जाति के लोगों के उत्थान के लिए एक संगठन के रूप में कार्य किया और महात्मा फुले के अनुयायी डा.अम्बेडकर ने अपने गुरू से आगे बढ़ कर हिन्दू धार्मिक सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था की तीव्र आलोचना करने दलितों को मुक्ति का मार्ग दिखाया यद्यपि स्पृश्य-अस्पृश्य का हृदय परिवर्तन एवं दोनों के मध्य सेतु स्थापित करने का श्रेय गाँधी जी को दिया जाता है परन्तु दलितों (अनुसूचित जातियों) को सजग प्रहरी की तरह अपने अधिकारों का बोध कराने के लिए संघर्ष को तैयार करने का श्रेय डा.अम्बेडकर को ही दिया जाता है।[5]

कानूनन बेशक छूआछूत खत्म हो गया है लेकिन भारत के काफी हिस्सों में आज भी दलितों के साथ भेदभाव किया जाता है इसे पूरी तरह खत्म करने के लिए हमें आज गाँधी और अम्बेडकर दोनों की ही विरासत की जरूरत है वैसे तो दोनों ही महान हस्तियों के बीच दलितों को लेकर काफी विवाद रहा और गाँधी और अम्बेडकर कभी एक पार्टी में साथ नहीं रहे। 1920 के मध्य डा.अम्बेडकर जब अपनी पढ़ाई पूरी कर स्वदेश लौटे तब महात्मा गाँधी, कॉग्रेस की अगुआई में हो रहे स्वतंत्रता आन्दोलन की कमान सम्भाल चुके थे और चारों ओर गाँधी जी का आभामण्डल फैल रहा था और हर कोई उनसे प्रभावित था लेकिन जैसा कि दिवंगत डी.आर.नागराज ने लिखा है-"डा.अम्बेडकर भी गर्व के साथ गाँधी जी के हनुमान, सुग्रीव की भूमिका निभाने को तैयार थे" परन्तु वास्तविकता यह है कि उन्होंने स्वयं राजनीति की अपनी एक रेखा खींची जो गाँधी जी और कांग्रेस पार्टी से न केवल स्वतंत्र वरन उनकी विरोधी थी। 1930 से 1940 के दशक में डा.अम्बेडकर ने गाँधी की तीखी आलोचना की उनका मानना था कि गाँधीजी अस्पृश्यता के दाग को हटाकर हिन्दुत्व को शुद्ध करना चाहते हैं दूसरी ओर डा.अम्बेडकर ने हिन्दुत्व को ही खारिज कर दिया था। उनका विचार था कि यदि दलित समान नागरिक की हैसियत पाना चाहते है तो किसी दूसरी आस्था को अपनाना पड़ेगा उनका मानना था कि हिन्दू धर्म ने अछूतों के हित के बारे में कुछ भी नहीं सोचा। डा.अम्बेडकर ने वर्णवाद के प्रति विरोध प्रदर्शित करते हुए कहा कि समाज में वर्ण विभाजन आलोकतांत्रिक एवं अवास्तविक है। "वर्ण विभाजन के परिणाम स्वरूप विशेष अधिकार प्राप्त

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

जातियाँ बन गई हं जिनमें असामाजिक भावनायें पैदा होती हैं।[6] इसीलिए वे कहते है कि मैं दलित वर्ग को जो धर्म देने जा रहा हूँ वो बौद्ध धर्म है। इसमें आत्मा ईश्वर, यहाँ तक कि देवताओं को लेकर कोई भ्रम नहीं है। इसमें सर्वव्यापी भाईचारा, न्याय, समानता एवं मानवता की सेवा की भावना भरी है।[7]

गाँधी एवं डा.अम्बेडकर के विचारों में कितना भी विरोध क्यों न रहा हो परन्तु हमें उनके आपसी विरोध पर ध्यान न देते हुए ऐसा सामंजस्य बैठाना होगा जिससे दोनों विचारकों के विचारों से समाज का लाभ हो सके क्योंकि यह सत्य है कि दो दार्शनिक स्तर के व्यक्तियों का दर्शन अलग-अलग होने के कारण उनकी सोच भी अलग-अलग होती है। वर्तमान में हम इतिहासकारों का लक्ष्य गाँधी और अम्बेडकर के बीच विरोधों को उभारना नहीं होना चाहिए अपितु समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने हेतु दोनों के संयुक्त प्रयासों को सम्मिलित करना होना चाहिए।

डा.अम्बेडकर चाहते थे कि समाज के सभी वर्गों का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में समान स्थान हो तथा उन्हें जीवन में उन्नति करने का समान अवसर दिया जाए और उनकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया जाए। डा.अम्बेडकर के सभी प्रयासों के पीछे यही मौलिक भावना थी। मूलत: वे समाज के सबसे दबे कुचले तबके की बात करते रहे किन्तु उनका मुख्य लक्ष्य समाज का सम्पूर्ण एवं सर्वांगीण विकास था।

डा.अम्बेडकर ने अपने जीवन के 65 वर्षों में कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की जो प्रत्येक दृष्टि से आज भी उतने ही सजीव तथा सशक्त है जितने कि वे उनके समय में थे। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त उनके बहुत से लेख है जो विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए है जिनका उद्देश्य दलितों का उत्थान था इसलिए उन्होंने जिस कलम को दलितों के प्रति हो रहे अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध उठाया उस कलम में सम्पूर्ण समाज का उत्थान ही निहित था। डा.अम्बेडकर की रचनाओं में उल्लिखित विचार वर्तमान व्यवस्था, अन्याय, शोषण एवं दमन पर कड़ा प्रहार करते हैं, जिसे निरन्तर बनाए रखाना समाज हित में है।[8]

डा.अम्बेडकर के सामाजिक चिन्तन की उत्पत्ति विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों में हुई जब उन्होंने समाज के सबसे दबे कुचले वर्ग की (अछूत एवं शुद्र) की दुखभरी गाथाओं का अध्ययन किया और उन्हें प्रत्यक्ष महसूस किया, जिससे उनका मानव हृदय विचलित हो उठा क्योंकि अनेक प्रकार की धार्मिक एवं सामाजिक बुराइयों ने इन वर्गों का जीवन बहुत दुष्कर कर दिया था। इन सभी परिस्थितियों को भलीभाँति जानने और समझने के बाद डा.अम्बेडकर के समाज दर्शन का जन्म हुआ। हिन्दु समाज में पैदा होने के कारण डा.साहब हिन्दु समाज की बुराइयों को भलिभाँति जानते थे। डा.अम्बेडकर ने अपना जीवन एक क्रांतिकारी सुधारक के रूप में शुरू किया। उन्होंने स्वयं को एक विरोधी हिन्दु घोषित किया।[9]

डा.अम्बेडकर ने एक मौलिक सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया और प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि "अब समय आ गया कि सभी हिन्दू भाइयों को अपने परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन लाना चाहिए उन्हें समझना चाहिए कि संसार में कोई भी वस्तु सनातन नहीं है। परिवर्तन जीवन का एक प्राकृतिक नियम है परिवर्तन ही विकास का आधार है व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन बिना परिवर्तन के प्रगतिशील नहीं बन सकता।"[10]

डा.अम्बेडकर ने भारतीय समाज का अध्ययन तथ्यात्मक तथा मूँल्यात्मक दोनों ही रूपों में किया उनकी सभी रचनाओं में सामाजिक जीवन के विशेष पक्षों का सूक्ष्म वर्णन मिलता है। उनका विचार ठोस समाजशास्त्रीय स्रोतों पर आधारित है।[11]

उनके अनुसार सामाजिक एकता और समता के बिना राजनैतिक स्वतंत्रता का कोई महत्व नहीं है। उन्होंने हिन्दुओं के सम्मुख यह तर्क प्रस्तुत किया "यदि भारत को स्वतंत्र कराना है तो सर्वप्रथम हिन्दू समाज का मौलिक सुधार होना चाहिए, क्योंकि बिना सामाजिक एकता एवं भ्रातत्व के स्वतंत्रता ढकोसला मात्र रह जाती है।"[12]

साधारणत: डा.अम्बेडकर के ग्रन्थों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि डा.अम्बेडकर सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक सुधारों के पक्षधर और जातिप्रथा के घोर विरोधी थे परन्तु इन सबके अतिरिक्त उनका एक और गुण महसूस होता है वह

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

है- अम्बेडकर का **"महिला अधिकारों का प्रहरी होना।"** इस विषय में प्रति प्रमाणिकता प्रस्तुत करने के लिए जब उन्होंने हिन्दू कोड़ बिल प्रस्तुत किया तब महिलाओं के अधिकारों का विशेष ध्यान रखा। इससे संबन्धित हुए मूलभूत उद्देश्य यह थे-

(1) सम्पत्ति पर स्त्रियों का पूर्ण अधिकार।

(2) पिता की सम्पत्ति में पुत्री का अधिकार।

(3) विवाह विच्छेदन के लिए प्रावधान।

इन सभी प्रावधानों का मूल उद्देश्य महिला अधिकारों को विस्तार प्रदान करना था ताकि हिन्दू वर्ग की सभी महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारा जा सके। इस प्रकार उनका यह त्याग निसन्देह उनकों स्त्रियों के अधिकारों के जागरुक प्रहरी और एक असाधारण सुधारक के रूप में हमारे समक्ष उभार कर लाता है। स्त्रियों को समान अधिकार के लिए उनकी सुदृढ़ प्रतिबद्धता ने हमारे संविधान पर अमिट छाप छोड़ी है। व्यापक मताधिकार पर उनके द्वारा बल दिया जाना उनकी जनतांत्रिक चेतना और लिंगों के आधार पर पूर्ण समानता की उनकी आन्तरिक उत्प्रेरणा का प्रमाण है।[13]

डा.अम्बेडकर भले ही सम्राट नहीं थे लेकिन उनकी कलम की ताकत किसी भी चक्रवर्ती सम्राट से कम न थी और उनकी दिमागी ताकत किसी भी विश्व विजेता की ताकत से कम न थी। डा.अम्बेडकर समय-समय पर मंगलकारी एवं सुखदायक कानूनों का निर्माण करते रहे ताकि मानवता हमेशा फलती- फूलती रहे और मानवीय मूल्य सदैव सुरक्षित रहें। उन्होंने भगवान बुद्ध की शिक्षा बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय से कानूनों का निर्माण कर मानवता को शक्तिशाली कवच पहनाया।[14]

बाबा साहब ने दलित वर्ग, नारी, मजदूरों तथा कृषकों के अधिकारों के लिए निर्भिक यौद्धा की भांति लड़ाई लड़ी और माँग भी की।[15] डा.अम्बेडकर के इन प्रयासों एवं उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर गाँधी जी ने अपने शब्दों में कहा था कि-"डा. अम्बेडकर एक महान राष्ट्रभक्त हैं।" गाँधी जी के ये शब्द डा.अम्बेडकर के व्यक्तित्व के परिचय के लिए काफी हैं। भारत के दलित समाज में आज जो स्वाभिमान और स्वावलम्बन जागृत हुआ है इसके जनक डा.अम्बेडकर ही है। मानवता को अधिकारों के लिए संघर्ष करना किसने सिखाया? लाचारी से न जीने की प्रेरणा किसने दी? अपना रास्ता खुद ढूँढने का मार्ग दर्शन किसने किया?, एक ही महान व्यक्ति हैं बाबा साहेब डा.भीमराव अम्बेडकर।[16] बाबा साहेब के व्यक्तित्व और विचारों का गहन अध्ययन करने के बाद उन्हें विश्व के महान मानवतावादी कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

डा.अम्बेडकर के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य अस्पृश्यता नष्ट कर समतावादी समाज का निर्माण करना निर्धारित किया था। वे कहते थे कि "अस्पृश्यों का उद्धार ही राष्ट्र का उद्धार है।" वे जन्म से ज्यादा योग्यता पर विश्वास करते थे। अस्पृश्यों की नई सभ्यता का उदय इन्ही उच्च उद्देश्यों की परिणिति है।

डा.अम्बेडकर के प्रखर व्यक्तित्व ने उनको भारतीय जनतंत्र के रखवाले के रूप में प्रस्तुत किया। उनके व्यक्तित्व के बारे में और क्या-क्या लिखा जाए? **भारत रत्न सम्मान के द्वारा उनके व्यक्तित्व की प्रखरता को स्वीकार किया जा चुका है।**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा.भीमराव अम्बेडकर एवं वर्तमान भारत, डा.राजेश कुमार, पृष्ठ-33.
2. नवयुग विशेषांक, अप्रैल 1947.
3. डा.भीमराव अम्बेडकर एण्ड हिज मूवमेंट, जिनेट रोबिन, पृष्ठ-131.
4. डा.भीमराव अम्बेडकर, मनोज कुमार, रवि रंजन, पृष्ठ-11.
5. डा.भीमराव अम्बेडकर और दलित, डा.महेश्वर दत्त, पृष्ठ-91

Impact Factor : 0.4521 (UIF)
ISSN:- 2393-8900

6. कांग्रेस एण्ड गाँधी, डा.भीमराव अम्बेडकर, पृष्ठ–296.
7. डा.भीमराव अम्बेडकर जीवन के अन्तिम कुछ वर्ष, नानक चंद रत्तु, पृष्ठ–95.
8. डा.भीमराव अम्बेडकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डा.डी.आर.जाटव, पृष्ठ–225.
9. व्हाट काँगेंस एण्ड गाँधी हैव इन टू द अण्चेबिल्स, डा.बी.आर.अम्बेडकर, पृष्ठ–317.
10. डा.भीमराव अम्बेडकर एवं वर्तमान भारत, डा.गणेश कुमार, पृष्ठ–46.
11. भारतीय समाज एवं विचारधाराएं, डा.डी.आर.जाटव, पृष्ठ–17.
12. एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, डा.बी.आर.अम्बेडकर, पृष्ठ–10.
13. डा.भीमराव अम्बेडकर, मनोज कुमार रविरंजन, पृष्ठ–174.
14. बाबा साहब अम्बेडकर व्यक्तित्व परिचय, श्याम सिंह, पृष्ठ–37.
15. समता के स्तम्भ बाबा साहेब और बाबूजी, जसराम हर गोटिया, पृष्ठ–50.
16. *डा.भीमराव अम्बेडकर एवं वर्तमान भारत, डा.राजेश कुमार, पृष्ठ–190.*